श्रीनवद्वीपधाम महात्मय

SGD

श्रीलगुरुदेव

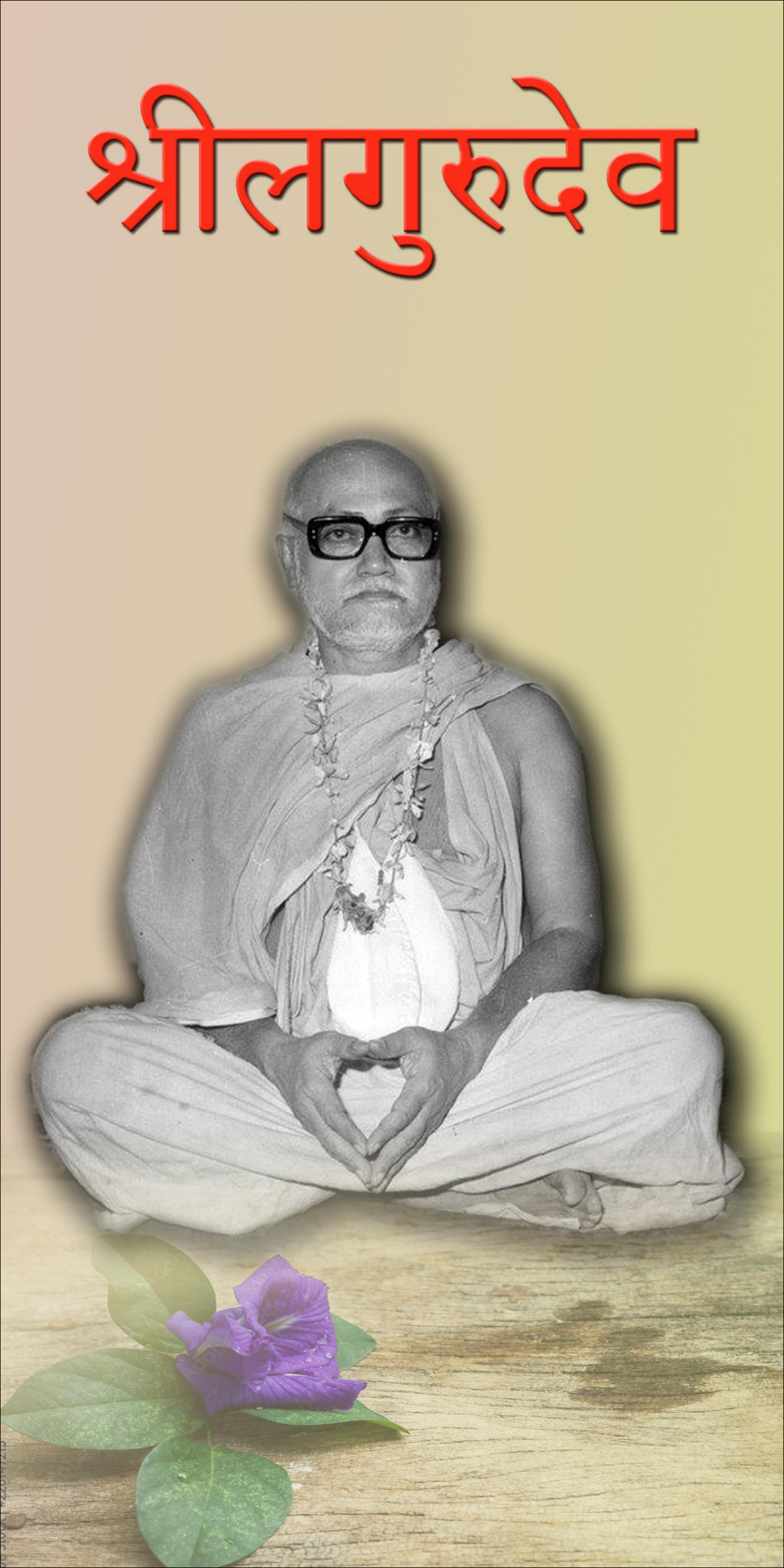

श्रीलगुरुदेव

श्रीश्रीगुरु- गौरांगौ जयतः

निवेदन

जिन महापुरुषों की कृपा से "श्रीनवद्वीपधाम - माहात्म्य' ग्रन्थ का संक्षेप में अनुवाद करने का सुयोग पाकर धन्य एवं कृतार्थ हुआ हूँ, उनमें सबसे पहले हैं अखिल भारतीय श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता, मेरे परमाराध्य श्रीगुरुदेव, नित्यलीला प्रविष्ट परमहंस ॐ 108 श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी विष्णुपाद एवं मेरे

परमगुरुपादपद्म, नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ 108 श्री श्रीमद् भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद जी। इसलिए यह दीन हीन सबसे पहले उन्हीं के चरणकमलों की अहेतुकी कृपा एवं आशीर्वाद की प्रार्थना करता है। "

इस ग्रन्थ में श्रीगौरतत्त्व और श्रीनवद्वीप धाम - माहात्म्य एवं परिशिष्ट रूप से श्रीअन्तर्द्वीप के अन्तर्गत श्रीधाम - मायापुर के दर्शनीय स्थानों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है जो कि श्रील नरहरि

चक्रवर्ती ठाकुर के 'भक्तिरत्नाकर', श्रील भक्तिविनोद ठाकुर के 'नवद्वीपधाम - माहात्म्य' ग्रन्थ तथा ‘श्रीचैतन्य - भागवत' और 'श्रीचैतन्यचरितामृत' आदि प्रामाणिक ग्रन्थों से लिया गया है। संकलन का ये महान कार्य मेरे बड़े गुरुभाई, पंडित श्रीविभुपद पंडा, काव्य - व्याकरण-पुराणतीर्थ, बी.ए., बी.टी. द्वारा किया गया है। उनके संकलन का प्रकाशन - श्री श्रीगौरहरि और श्रीगौरधाम - माहात्म्य" नाम से बंगला भाषा में किया गया था। मैं तो केवल उस ग्रन्थ का हिन्दी भाषा में अनुवाद करके उसे

हिन्दी - भाषी वैष्णवों की सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ।

भगवान श्रीकृष्ण, सच्चिदानन्द विग्रह हैं। वे परमेश्वर हैं, अनादि हैं, सर्वादि हैं तथा तमाम कारणों के कारण हैं। इस धन्य कलियुग में वे भगवान नन्दनन्दन श्रीकृष्ण ही, जगत वासियों को अपना प्रेम प्रदान करने के लिये, श्रीगौरांग महाप्रभु रूप से अवतीर्ण हुये थे। इसलिये श्रीकृष्ण एवं श्रीगौरांगदेव सर्वथा अभिन्न हैं। **16 कोस नवद्वीप धाम के अन्तर्गत अन्तर्द्वीप, सीमन्तद्वीप, गोदुमद्वीप,**

मध्यदीप, कोलद्वीप, ऋतुद्वीप जहुद्वीप, मोददुमद्वीप और रुद्रद्वीप नामक नौ द्वीप हैं। ये नौ द्वीप भगवान की नवधा भक्ति के पीठ-स्वरूप ही हैं। इनमें अन्तर्द्वीप आत्मनिवेदन भक्ति का क्षेत्र है तथा अन्य आठ द्वीप यथाक्रम से श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य और सख्य भक्ति अंगों के क्षेत्र हैं। इस तरह पूरा नवद्वीपधाम ही श्रीगौरांगसुन्दर भगवान श्रीचैतन्य महाप्रभु जी और उनके अन्तरंग पार्षदगणों का लीलाक्षेत्र है। महावदान्य श्रीमन्महाप्रभुजी की तरह

उनका चिन्मय धाम भी करुणासागर व अति अद्भुत दाता शिरोमणि अर्थात् परमपुरुषार्थ

श्रीगौरकृष्णपादपद्मों में श्रीकृष्ण प्रेम सम्पदा को देने वाला है। अपने दिव्य भजनों में श्रील नरोत्तम दास ठाकुर महाशय जी ने गान किया है

"श्रीगौड़मण्डल - भूमि येबा जाने
चिन्तामणि,
तार हय वज भूमे वास"।

अर्थात् श्रीगौड़मण्डल भूमि श्रीनवद्वीप धाम को, जो चिन्तामणि

की तरह अप्राकृत समझते हैं, उन्हीं का ही व्रजवास होता है।

श्रील ठाकुर भक्तिविनोद जी ने भी कीर्तन किया है

"हा हा कबे गौर निताइ, ए पतित जने
उरु कृपा करि,
देखा दिबे दु'टि भाई ।।

दूँहु कृपाबले, नवद्वीपधामे, देखिब
वजेर शोभा ।
स्वानन्द - सुखद - कुंज - मनोहर
हेरिब नयन लोभा।।"

अर्थात् कब मेरे जीवन में वह दिन आएगा जब श्रीगौरांग महाप्रभुजी व श्रीमन् नित्यानन्द जी इस पतित जीव पर कृपा करते हुए अपना दर्शन देंगे। उन दोनों की कृपा से ही मैं श्रीनवद्वीप धाम में, श्रीव्रजमण्डल की शोभा का दर्शन करूँगा।

"वृन्दावनाभेदे नवद्वीपधामे,

बाँधिब कुटीरवानि ।

शचीर नन्दन चरण - आश्रय, करिब

संबन्ध मानि" ।।

"काँदिते काँदिते षोलक्रोशधाम

जाहवी उभय - कूले ।

भ्रमिते भ्रमिते कभु भाग्यफले देखि
किछु तरुमूले ॥ "

अर्थात् श्रीधाम वृन्दावन से अभिन्न श्रीनवद्वीप धाम में कब मैं अपने सारे जगत के ऐश्वर्य को छोड़कर भजन करने के लिए एक कुटिया का निर्माण करूँगा और श्रीशचीनन्दन गौरहरिजी का चरणाश्रय ग्रहण करते हुए, उन्हीं से बने सम्बन्ध को अपना सर्वस्व मानूँगा।

अभिन्न व्रज - धाम अर्थात् श्रीधामेश्वर, श्रीसंकीर्तन- पिता श्रीनवद्वीपधाम की कृपा से पतित

जनों के बन्धु, परमदयालु श्रीगौर व श्रीनिताइ, इन दोनों भाइयों के दर्शनों का सौभाग्य, भाग्यवान भक्त के भाग्य में अभी भी मिल सकता है क्योंकि -

"अद्यापिह सेइ लीला करे गौर राय।
कोन कोन भाग्यवान देखिवारे पाय॥"

अर्थात् आज भी वे सच्चिदानन्द श्रीगौरहरि जी लीला कर रहे हैं। हाँ, कोई-कोई भाग्यवान उसका दर्शन कर सकता है। निष्कपट आर्त भाव के साथ श्रीधाम की महिमा गान करते-करते श्रीधाम परिक्रमा करते रहने से अभी भी सपार्षद गौरहरि की साक्षात्

कृपा की उपलब्धि होती है। इसीलिये नवधाभक्ति के पीठस्थान स्वरूप श्रीश्रीनवद्वीपधाम - परिक्रमा के इच्छुक हिन्दी - भाषी भक्तगणों के लिये श्रीश्रील ठाकुर भक्तिविनोद - रचित श्रीश्रीनवद्वीपधाम - माहात्म्य ग्रन्थ का संक्षिप्त सार - स्वरूप यह ग्रन्थ विशेष सहायक होगा, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

परम करुणामय श्री श्रीगुरु - गौरांग - श्रीराधागाविन्ददेव जी अपने परिकरवर्ग के साथ प्रसन्न होकर, इस दीनहीन सेवक को कृपापूर्वक अपनी

सेवा में नियोजित करें, यही उनके चरणों में कातर प्रार्थना है। इति

श्रीगौर पूर्णिमा तिथि

15 मार्च, 1987

श्रीहरि - गुरु - वैष्णव कृपाभिक्षु,

श्रीभक्तिप्रसाद पुरी ।

(प्रस्तुत निवेदन पूज्यपाद त्रिदण्डिस्वामी श्री श्रीमद् भक्ति प्रसाद पुरी महाराज जी द्वारा इस ग्रन्थ के प्रथम संस्करण के समय लिखा गया था।)

* * * * * * *

श्रीलगुरुदेव